

Vol 3 Issue 3 Dec 2013

Impact Factor : 1.6772 (UIF)

ISSN No : 2249-894X

*Monthly Multidisciplinary
Research Journal*

*Review Of
Research Journal*

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595

ISSN No.2249-894X

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho Federal University of Rondonia, Brazil	Horia Patrascu Spiru Haret University, Bucharest, Romania	Mabel Miao Center for China and Globalization, China
Kamani Perera Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka	Delia Serbescu Spiru Haret University, Bucharest, Romania	Ruth Wolf University Walla, Israel
Ecaterina Patrascu Spiru Haret University, Bucharest	Xiaohua Yang University of San Francisco, San Francisco	Jie Hao University of Sydney, Australia
Fabricio Moraes de Almeida Federal University of Rondonia, Brazil	Karina Xavier Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA	Pei-Shan Kao Andrea University of Essex, United Kingdom
Catalina Neculai University of Coventry, UK	May Hongmei Gao Kennesaw State University, USA	Loredana Bosca Spiru Haret University, Romania
Anna Maria Constantinovici AL. I. Cuza University, Romania	Marc Fetscherin Rollins College, USA	Ilie Pinte Spiru Haret University, Romania
Romona Mihaila Spiru Haret University, Romania	Liu Chen Beijing Foreign Studies University, China	
Mahdi Moharrampour Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran	Nimita Khanna Director, Isara Institute of Management, New Delhi	Govind P. Shinde Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai
Titus Pop PhD, Partium Christian University, Oradea, Romania	Salve R. N. Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur	Sonal Singh Vikram University, Ujjain
J. K. VIJAYAKUMAR King Abdullah University of Science & Technology, Saudi Arabia.	P. Malyadri Government Degree College, Tandur, A.P.	Jayashree Patil-Dake MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC), Kachiguda, Hyderabad
George - Calin SERITAN Postdoctoral Researcher Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi	S. D. Sindkhedkar PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]	Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary Director, Hyderabad AP India.
REZA KAFIPOUR Shiraz University of Medical Sciences Shiraz, Iran	Anurag Misra DBS College, Kanpur	AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI, TN
Rajendra Shendge Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur	C. D. Balaji Panimalar Engineering College, Chennai	V.MAHALAKSHMI Dean, Panimalar Engineering College
	Bhavana vivek patole PhD, Elphinstone college mumbai-32	S.KANNAN Ph.D , Annamalai University
	Awadhesh Kumar Shirotriya Secretary, Play India Play (Trust), Meerut (U.P.)	Kanwar Dinesh Singh Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net



विश्व में हिंदी की दशा और दिशा

कृष्णचंद रत्नाण

कुलसचिव कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

सारांश :

न्यूनाधिक अंशों में प्रायः समूचे राष्ट्र में व्याप्त और भिन्न-भिन्न भाषाभाषी समुदायों के बीच धार्मिक, राजनीतिक एवं आर्थिक संदर्भों में सहज ही प्रयुक्त सम्पर्क – भाषा को, पारिभाषिक अर्थ में, राष्ट्रभाषा कहा जाता है। राष्ट्रभाषा इस पद पर स्वतः आसीन हो जाती है, इसके लिए किसी शासनादेश की आवश्यकता नहीं पड़ती, जबकि राष्ट्रभाषा बनने-बनाने के लिए राजाज्ञा अथवा विधि-विधान की अनिवार्यता होती है। यह कतई आवश्यक नहीं है कि राष्ट्रभाषा ही राजभाषा भी हो। उदाहरणार्थ, हमारे यहां समय-समय पर फारसी और अंग्रेजी राजभाषाएं तो रही हैं, लेकिन ये राष्ट्रभाषाएं कभी नहीं रहीं। अस्तु! सैंकड़ों वर्षों से हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा है। यों कहने-भर को वह आज हमारी राजभाषा (सह-रामभाषा) भी है।

प्रस्तावना :

हिन्दी एक विश्वभाषा भी है, क्योंकि वह एक देश (भारत) की राष्ट्रभाषा होने के साथ-साथ अन्य देशों में भी पर्याप्त संख्या में लोगों द्वारा लिखी, बोली और समझी जाती है। इसलिए आज हिन्दी की स्थिति-गति को भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा और राजभाषा तक की सीमित न रखकर उसके वैश्विक संदर्भों का आंकलन करना भी अनिवार्य हो गया है।

हिन्दी भाषा दो अर्थों में मान्य है। व्यापक अर्थ में अवधी, ब्रज, कन्नौजी, भोजपुरी, राजस्थानी, बुन्देली, हरियाणवी और छत्तीसगढ़ी भाषा-रूप हिन्दी में सन्निविष्ट माने जाते हैं। भारत के जनगणना-आयुक्त की ताजा रपट के अनुसार, हिन्दी छियालीस बोलियों का परिवार है। इसका आशय यह है कि हिन्दी इन छियालीस बोलियों के माध्यम से बोलती है। 'हिन्दी' के श्रेष्ठ रचनाकार हैं। सीमित अर्थ में हिन्दी शब्द का यह प्रयोग पूर्णतः वैध है, क्योंकि अवधी के तुलसीदास, ब्रज के सूरदास और राजस्थानी की मीरा आदि 'हिन्दी' के श्रेष्ठ रचनाकार हैं। सीमित अर्थ में हिन्दी शब्द से हमारा भाषायी संरचनागत तात्पर्य खड़ी बोली (मानक हिन्दी) से है, यहां बोलियों में बोलने/लिखने से परहेज़ की उपेक्षा की जाती है।

हिन्दी का रूप बिगड़ता जा रहा है, यह धारणा नितांत भ्रामक है। याद रहे, प्रत्येक भाषा शनैः शनैः बदलती रहती है, इसे उस भाषा का रूप-बिगड़ना नहीं, रूप-बदलना मानना चाहिए। निःसंदेह, वैविध्य रहना और वैविध्य आना किसी भी भाषा की सहज और अनिवार्य प्रकृति होती है। मानक हिन्दी खड़ीबोली के ही वैविध्य को देखने से उसके (1. संस्कृतनिष्ठ, 2. फारसी-अरबी, उर्दू शब्दावली से भरपूर तथा 3. अंग्रेजी-शिक्षा से प्रभावित प्रयोग, हिन्देज़ी/हिंग्लिश) स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं। ये तीनों सीमांत हिन्दी की आज की वस्तु-स्थिति के सत्य हैं, जिन्हें नकारना अपने-आपको छलावे में डालना है। इस प्रकार, "इन तीनों सीमांतों के बीच पाया जाने वाला भाषा-रूप, समग्र रूप से, हिन्दी का सर्व-समावेशी रूप है।"

विश्व-भर में भाषा सम्बन्धी जानकारी देने वाली सर्वाधिक विश्वस्त पुस्तक एथेनेलॉग के ताज़ा संस्करण के अनुसार, संसार में इस समय 6912 भाषाएं बोली जाती हैं। न्युयार्क में किए गए भाषा सम्बन्धी ताज़ा अध्ययन वाइटल साइन में कहा गया है कि इक्कीसवीं शताब्दी के अंत तक इनमें से 10 प्रतिशत भाषाओं के अपने मूल को खो देने की आशंका है। अनेकानेक अपरिहार्य कारणों से लोग स्वतः अपनी भाषाओं से दूर होते जा रहे हैं और एक दिन इन्हें सर्वथा भूल जाएंगे। ध्यातव्य है कि जो 1 प्रतिशत भाषाएं बचेंगी, उनमें हिन्दी तो होगी ही। विश्व-बाज़ार की हिन्दी पर निर्भरता को देखते हुए मुझे उसके विश्वव्यापी भाषा बनने में कतई कोई संदेह नहीं है, क्योंकि भूमण्डलीकरण के इस दौर में दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र, सर्वाधिक जनसंख्या वाले राष्ट्र और सबसे बड़े उपभोक्ता बाज़ार की भाषा हिन्दी को नज़रअंदाज करता संभव नहीं है।

यदि थोड़ी देर के लिए विश्व में हिन्दी के भावी स्थान की बात छोड़कर उसकी वर्तमान स्थिति-गति और

महत्ता पर ही नज़र दौड़ें, तो हमारे बेहद उत्साहवर्धक आंकड़े उपस्थित होते हैं। उदाहरणार्थ —

विश्व के कुल 203 देशों में से 180 देशों में हिन्दी की स्वर-लहरियाँ, देशी-विदेशी लोगों के बीच, भारतीय सभ्यता और संस्कृति के प्रति अपनत्व-भाव जगा रही हैं। यह बात दूसरी है कि युनस्को की नौ भाषाओं (अरबी, अंग्रेजी, चीनी, फ्रेंच, रूसी, स्पेनिश, हिन्दी, इतालवी, पुर्तगाली) में सम्मिलित होते हुए भी, हमारी अपनी सरकारी उपेक्षा के कारण, वह अभी तक संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषाओं (चीनी, स्पेनिश, अंग्रेजी, अरबी, रूसी, फ्रेंच में अपना नाम जड़वाने का गौरव नहीं प्राप्त कर सकी है।

'एनकार्टा एनसाइक्लोपीडिया' के अनुसार, चीनी भाषा के बाद, संसार में प्रयुक्त होने वाली दूसरी सबसे बड़ी भाषा हिन्दी है। हिन्दी के बाद क्रमशः स्पेनिश, अंग्रेजी, अरबी, रूसी और फ्रांसीसी भाषाओं का स्थान आता है। संयुक्त राष्ट्र संघ में भी 6 आधिकारिक भाषाएं शामिल की गई हैं, जिनमें — 1. अरबी, 2. चीनी, 3. अंग्रेजी, 4. फ्रेंच, 5. रूसी, 6. स्पेनिश। संयुक्त राष्ट्र की ये 6 आधिकारिक भाषाएं अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की भी आधिकारिक भाषाएं हैं। उदाहरणार्थ, 1. अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी, 2. अंतर्राष्ट्रीय विकास एजेंसी, 3. अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ, 4. संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन, 5. विश्व स्वास्थ्य संगठन, 6. संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन, 7. संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय बाल-आपातिक निधि। उधर विश्व के 13 देशों को हम तीन वर्गों में इस प्रकार विभाजित कर सकते हैं।

1. इस वर्ग के देशों में भारतीय मूल के आप्रवासी नागरिक की आबादी देश की जनसंख्या में लगभग 40 प्रतिशत था उससे अधिक है। इन अधिकांश देशों में सरकारी एवं गैर-सरकारी, प्राथमिक एवं माध्यमिक स्कूलों में हिंदी का शिक्षण होता है। इन देशों के अधिकांश भारतीय मूल के आप्रवासी जीवन के विविध क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग करते हैं, एवं अपनी सांस्कृतिक पहचान के प्रतीक के रूप में हिंदी को ग्रहण करते हैं। इन देशों में निम्नलिखित देश उल्लेखनीय हैं — 1. मॉरीशस, 2. फीजी, 3. सूरीनाम, 4. गुयाना, 5. त्रिनिडाड एवं टुबेगो। त्रिनिडाड के अतिरिक्त अन्य सभी देशों में हिंदी का व्यापक प्रयोग व्यवहार होता है।

2. इस वर्ग के देशों में ऐसे निवासी रहते हैं, जो हिंदी को विश्व भाषा के रूप में सीखते, पढ़ते तथा हिंदी में लिखते हैं। इन देशों की विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में प्रायः स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर हिंदी की शिक्षा का प्रबंध है। कुछ देशों के विश्वविद्यालयों में हिंदी में शोध कार्य करने तथा डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त करने की भी व्यवस्था है। इन देशों में निम्नलिखित देशों के नाम उल्लेखनीय हैं —

महाद्वीप देश

क. अमेरिका महाद्वीप : 6. संयुक्त रा:य अमेरिका, 7. कनाडा, 8. मैक्सिको, 9. क्यूबा।

ख. यूरोप महाद्वीप : 10. रूस, 11. ब्रिटेन (इंग्लैंड), 12. जर्मनी, 13. फ्रांस, 14. बेल्जियम, 15. हालैंड (नीदरलैंड्स), 16. ऑस्ट्रिया, 17. स्विट्जरलैंड, 18. डेनमार्क, 19. नार्वे, 20. स्वीडन, 21. फिनलैंड, 22. ईटली, 23. पोलैंड, 24. चेक, 25. हंगरी, 26. रोमानिया, 27. बल्गारिया, 28. उक्रेन, 29. कोशिया।

ग. अफ्रीका महाद्वीप : 30. दक्षिण अफ्रीका, 31. रीयूनियन द्वीप।

घ. एशिया महाद्वीप : 32. पाकिस्तान, 33. बंगलादेश, 34. श्रीलंका, 35. नेपाल, 36. भूटान, 37. म्यांमार (बर्मा), 38. चीन, 39. जापान, 40. दक्षिण कोरिया, 41. मंगोलिया, 42. उबेकिस्तान, 43. ताजिकिस्तान, 44. तुर्की, 45. थाइलैंड।

ड. ऑस्ट्रेलिया : 46. ऑस्ट्रेलिया।

3. इसका उल्लेख किया जा चुका है कि भारत की राजभाषा हिंदी है तथा पाकिस्तान की राजभाषा उर्दू है। इस कारण हिंदी-उर्दू भारत एवं पाकिस्तान में सम्पर्क भाषा के रूप में व्यवहृत है। भारत एवं पाकिस्तान के अलावा हिंदी तथा उर्दू मातृभाषियों की बहुत बड़ी संख्या विश्व के लगभग 60 देशों में निवास करती है। इन देशों में भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश, भूटान, नेपाल आदि देशों के आप्रवासियों या आनिवासियों की विपुल आबादी रहती है। इन देशों की यह आबादी सम्पर्क-भाषा के रूप में हिंदी-उर्दू का प्रयोग करती है, हिंदी की फिल्में देखती हैं, हिंदी के गाने सुनती हैं तथा टेलीविजन पर हिंदी कार्यक्रम देखती हैं। इन देशों में संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, मैक्सिको, ब्रिटेन (इंग्लैंड), जर्मनी, फ्रांस, हालैंड (नीदरलैंड्स), दक्षिण अफ्रीका, दक्षिण कोरिया, उज्बेकिस्तान, ताजिकिस्तान, थाइलैंड, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों के अलावा निम्नलिखित देशों के नाम उल्लेखनीय हैं — 47. अफगानिस्तान, 48. अर्जेंटिना, 49. अल्जेरिया, 50. इक्वेडोर, 51. इंडोनेशिया, 52. इराक, 53. ईरान, 54. यूगांडा, 55. ओमान, 56. कजाकिस्तान, 57. कतर, 58. कुवैत, 59. केन्या, 60. अयवारी कोस्ट, 61. ग्वाटेमाला, 62. जमाइका, 63. जांबिया, 64. नाइजीरिया, 66. निकारगुआ, 67. न्यूजीलैंड, 68. पनामा, 69. पुर्तगाल, 70. पैरू, 71. पैरागुवै, 72. फिलिपींस, 73. बहरीन, 74. ब्राजील, 75. ब्रुनेई, 76. मलेशिया, 77. मिस्त्र, 78. मेडागास्कर, 79. मोजांबिक, 80. मोरक्को, 81. मौरिटानिया, 82. यमन, 83. लीबिया, 84. लेबनान, 85. वेनेजुएला, 86. सऊदी अरब, 87. संयुक्त अर अमीरात, 88. सिंगापुर, 89. सूडान, 90. सेशेल्स, 91. स्पेन, 92. हांगकांग (चीन), 93. हॉङ्गकांग।

हाल ही में प्रकाशित रिपोर्टों के आधार पर कहा जा सकता है कि पूरे विश्व में 100 करोड़ से अधिक लोग हिंदी को बोलते एवं समझते हैं। इतना ही नहीं विश्व के 132 देशों में बसे भारतीय मूल के करोड़ों लोग हिंदी बोलते तथा समझते हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की शब्दावली अंग्रेजी के शब्दकोशों में हिन्दी के शब्द निरंतर सिंहासनरुढ़ होते

जा रहे हैं। सद्य-प्रकाशित ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी शब्दकोश में हिन्दी के लगभग तमाम प्रचलित शब्दों, यथा – आलू, अच्छा, अरे, देसी, फिल्मी, गोरा, चड़ड़ी, यार, जंगली, धरना, गुण्डा, बदमाश, बिंदास, लहंगा व मसाला आदि को स्थान मिल गया है। ऑक्सफोर्ड एड्वांस लर्नर डिक्शनरी के ताज़ा संस्करण में तो जुगाड़ तक को स्थान मिल गया है। ऐ अनुमान के अनुसार अब तक लगभग पांच प्रतिशत हिन्दी-शब्द अंग्रेजी में प्रवेश कर चुके हैं।

भारत के अतिरिक्त लगभग 175 विदेशी विश्वविद्यालयों में हिन्दी शिक्षण-प्रशिक्षण के कार्यक्रम और शोध-कार्य सुचारू रूप से चल रहे हैं। अकेले अमेरिका के ही 54 से अधि विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्ययन-अध्यापन की सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। वॉयस ऑफ अमेरिका तथा हिन्दी के रेडियो व टीवी-चैनल इस सुविधा में और अधि वृद्धि कर रहे हैं। अब तो अमेरिका के स्कूली पाठ्यक्रम में 480 पृष्ठों पर आधारित 'नामक हिन्दी-पाठ्यपुस्तक को सम्मिलित कर लिया गया है, जिसे एक भारतवंशीशिक्षक ने आठ वर्षों के कठिन परिश्रम से तैयार किया है। आपको यह तो याद होगा ही कि अमेरिका से भारत-दौरे पर आए माइक्रोसॉफ्टवेयर की आवश्यकता है और इस आवश्यकता की पूर्ति हेतु अमारा माइक्रोसॉफ्ट तैयार है।' हमने देखा कि दो वर्षों के भीतर ही उन्होंने हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के कम्प्यूटर बाज़ार में उतार दिए थे।

हिन्दी के बढ़ते कदमों की आहट पाते ही दुनिया के सबसे शक्तिशाली व्यक्ति, अमेरिका के राष्ट्रपति बुश ने 'राष्ट्रीय सुरक्षा भाषा कार्यक्रम' के अंतर्गत अपने देशवासियों को हिन्दी, फारसी, अरबी, चीनी और रूसी भाषाएं सीखने के लिए प्रेरित करते हुए कहा था – 'हिन्दी ऐसी विदेशी भाषा है, जिसे इक्कीसवीं सदी में, राष्ट्रीय सुरक्षा और समृद्धि के कारण, अमेरिका के नागरिकों को सीखना चाहिए।' इसी क्रम में राष्ट्रपति चुने जाने के बाद ओबामा ने अपने पहले चुनावी घोषणापत्र की प्रतियां, अंग्रेज़ी के साथ-साथ, हिन्दी में भी छपवाकर वितरित की थीं। राष्ट्रपति चुने जाने के बाद ओबामा ने अपनी सरकार की कार्यकारी शाखा में राजनीतिक पदों को भरने के लिए विश्व के जिन 101 भाषाओं में आवेदनपत्र तैयार करवाया था, उनमें हिन्दी सहित भारत की 20 क्षेत्रीय भाषाओं को भी स्थान दिया गया था। इतना ही नहीं, ओबामा द्वारा रमज़ान की मुबारकबाद, उर्दू के साथ-साथ, हिन्दी में भी दी जाती रही है। सन् 2012 के पुनः राष्ट्रपति चुनाव में तो उन्होंने माधिकार-पत्र हिन्दी में भी प्रकाशित करवाया था।

ब्रिटेन के रेडियो और टीवी चैनलों पर हिन्दी की धूम है। अन्य अनेक सामान्य-विशिष्ट कार्यक्रमों के साथ-साथ यहां से एक बार महाभारत सीरियल का प्रसारण हो चुका है। ब्रिटेन में अब तक रामचरितमानस के आठ हिन्दी अनुवाद हो चुके हैं और यहां स्थापित अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी समिति, निजी तौर पर, अपना हिन्दी-सम्मेलन आयोजित कर चुकी है। इतना ही नहीं, बर्मिंघम-स्थित 'मिडलैण्ड्स वर्ल्ड ट्रेड फोरम' के अध्यक्ष पीटर मैथ्यूज़ ने ब्रिटिश उद्यमियों, कर्मचारियों और छात्रों को हिन्दी सीखने की सलाह दी है, ताकि हिन्दी-संसार पर व्यापारिक-सांस्कृतिक पकड़ और मजबूत की जा सके।

अन्यान्य क्षेत्रों में भी हिन्दी लगातार आगे बढ़ रही है। आंकड़े साक्षी हैं कि हम आपके हैं कोन की जितनी टिकटें विदेशों में बिकीं, संसार-भर में उतनी टिकटें किसी अन्य फिल्म की नहीं बिकीं। अभी कल की ही तो बात है कि हमारी आवाज़ फिल्म के प्रति रूसियों में कैसा पागलपन देखने को मिला था। यह भी एक अकाट्य तथ्य है कि सत्यसाई बाबा के भजनों को हृदयगम करने के लिए विश्व के लाखों लोग हिन्दी सीख चुके/रहे हैं। केबीसी, शाहरुख-आमिर-सलमान आदि की फिल्मों तथा सास-बहू सीरियलों को देखने के लिए अगणित विदेशी हिन्दी-व्यवहार में निपुण हो चुके हैं। निःसंदेह, हिन्दी को दुनिया भर में पहुंचाने-फैलाने में इन माध्यमों की भी बहुत बड़ी ऐतिहासिक भूमिका है।

दर्पण झूठ न बोले! आज हिन्दी मात्र एक देश (भारत) की ही भाषा नहीं है, वह विश्व-भर में फैले प्रवासी भारतीयों के परस्पर सम्पर्क और ऐतिहासिक पहचान की भाषा भी है, एक नये विश्वधर्म, अंतरराष्ट्रीय अनुशासन और मानवीय समरसता की भाषा भी है तथा विश्व की सर्वाधिक प्रतिष्ठित, मान्यता-प्राप्त और प्रयुक्त भाषा भी है। सम्प्रेषण की नव्यतम तकनीक के साथ गहरा तालमोल स्थापित करने में समर्थ-समक्ष हो चुकी हिन्दी की वैश्विक भूमिका को अब और अधिक महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. श्रीमती पूनम जुनेजा, विश्व में हिंदी पत्रिका-2011 विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस,
2. श्री बालेंदु शर्मा दधीच, हिंदी ब्लॉगिंग: कुछ पुनर्विचार, आलेख, विश्व में हिंदी पत्रिका-2011,
3. श्रीमती पूर्णिमा वर्मन, वेब पत्रकारिता: कल आज और कल, आलेख, विश्व में हिंदी पत्रिका-2011,
4. श्री विजय सती, हंगरी में हिंदी: गतिविधियां और प्रेरणा के मूल स्रोत, आलेख, विश्व में हिंदी पत्रिका-2011,
5. प्रो. विजयकुमारन, स्पेन में हिंदी और भारतीय सिद्धांतविषयक पाठ्यचर्चा, आलेख, विश्व में हिंदी पत्रिका-2011
6. डॉ. दिनेश श्रीवास्तव, ऑस्ट्रेलिया में हिंदी, आलेख, विश्व में हिंदी पत्रिका-2011
7. आलेसिया माकोव्यकाया, बेलारूस में मेरी हिंदी: बचकानी अभिरुचि से लेकर व्यावसायिक कार्य तक, आलेख, विश्व में हिंदी पत्रिका-2011
8. डॉ. अनिता गांगुली, अंडमान निकोबार द्वीप-समूह की हिंदी, आलेख, विश्व में हिंदी पत्रिका-2011
9. डॉ. रवींद्र अग्निहोत्री, ऑस्ट्रेलिया में हिंदी कथ्य और तथ्य, आलेख, विश्व में हिंदी पत्रिका-2011
10. श्रीमती स्नेह ठाकुर, हिंदी, हमारी प्रिय हिंदी साहित्य, आलेख, विश्व में हिंदी पत्रिका-2011

11. श्रीमती अर्चना पैन्थूली, साहित्य में प्रवासी हिंदी साहित्य, आलेख, विश्व में हिंदी पत्रिका-2011
12. प्रो. राजभजन सीताराम, दक्षिण अफ्रीका में हिंदी साहित्य, आलेख, विश्व में हिंदी पत्रिका-2011
13. श्री. सलेश कुमार, फीजी का हिंदी साहित्य, आलेख, विश्व में हिंदी पत्रिका-2011
14. डॉ. इला प्रसाद, अमेरिका का साहित्यिक परिदृश्य तथा अमेरिका में हिंदी का भविष्य, विश्व में हिंदी पत्रिका-2011
15. डॉ. सुधा ओम ढींगरा, अमेरिका के हिंदी कथा साहित्य में अमेरिका परिवेश, आलेख, विश्व में हिंदी पत्रिका-2011

Publish Research Article International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ★ International Scientific Journal Consortium Scientific
- ★ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net